जेंडर संवेदनशील शिक्षकों का सृजन

मधु कुशवाहा

इस लेख में लेखिका उनके द्वारा पढ़ाए जा रहे जेंडर पाठ्यक्रम के अनुभवों को सामने रखते हुए रोज़मर्रा के जीवन में जेंडर पूर्वाग्रहों के मसलों पर ध्यान आकर्षित करती हैं। वे कुछ उदाहरणों को रखते हुए विद्यालयी दायरों के विभिन्न अवयवों में लैंगिक समरसता को पोषित करने के कुछ रास्ते भी सुझाती हैं, वे इन प्रयासों को पुख़्ता करने के लिए अध्यापक शिक्षा में व्यापक सुधार की बात भी करती हैं। सं.

सार संक्षेप

शिक्षा द्वारा जेंडर समानता के लक्ष्य को प्राप्त करने में सभी का विश्वास है। यद्यपि शिक्षा में असीम सम्भावनाएँ हैं पर यह कोई जादुई छड़ी नहीं है। शिक्षा के द्वारा जेंडर समानता का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है, बशर्ते शिक्षा प्रक्रिया स्वयं जेंडर पूर्वाग्रहों से मुक्त हो। विद्यालय में जेंडर असमानता बहुधा छुपे हुए पाठ्यक्रम का हिस्सा होती है और बड़े पैमाने पर समाज में व्याप्त जेंडर पूर्वाग्रहों, जेंडर-आधारित श्रम विभाजनों को ही पुष्ट करती है अतः इसपर शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों व अन्य नीति निर्माताओं का ध्यान कम ही जाता है। शिक्षा द्वारा समाज में जेंडर समानता लाने का लक्ष्य हो या जेंडर पूर्वाग्रहों में परिवर्तन का, कोई भी लक्ष्य तब तक प्राप्त नहीं हो सकता जब तक अध्यापकों / अध्यापिकाओं में जेंडर संवेदनशीलता न हो। अतः मेरे दृष्टिकोण से सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा भावी शिक्षकों में जेंडर की समझ विकसित करना सामाजिक परिवर्तन लाने का बहुत ही किफ़ायती और दूरगामी क़दम है।

शिक्षक प्रशिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण भाग अभ्यास शिक्षण है और इस आलेख में, मैं अपने उन अनुभवों के बारे में बात करूँगी जिनका मुख्य फ़ोकस अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों का ध्यान उनके शिक्षण में मौजूद चेतन और अचेतन जेंडर पूर्वाग्रहों पर आकर्षित करना और उसपर कार्य करना रहा है। इसके साथ ही जेंडर पाठ्यक्रम के शिक्षण अनुभवों द्वारा शिक्षणशास्त्रीय दुविधाओं और चुनौतियों की तरफ़ भी ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करूँगी।

विगत तीन-चार दशकों से भारत में शिक्षा नीतियों का एक मुख्य उद्देश्य जेंडर समानता की प्राप्ति रहा है, परन्तु इसके क्रियान्वयन में हमें अपेक्षित सफलता नहीं मिली है। 'शिक्षा में जेंडर मुद्दे' *(राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005,* का अवलोकन है कि, "स्कूली शिक्षा समाजीकरण के दौरान सीखी जाने वाली जेंडर असमानता व सामाजिक नियंत्रण को और बढ़ाती है; वस्तुस्थिति यह है कि विद्यालय ख़ुद कुछ सीमाएँ (जेंडर-आधारित) बनाते हैं जो सम्भावनाओं को सीमित करने वाली होती हैं।"

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 का एक महत्त्वपूर्ण आयाम शिक्षा में जेंडर मुद्दों को सम्बोधित करना रहा है; परिणामस्वरूप, पाठ्यपुस्तकों में जेंडर पूर्वाग्रहों को समाप्त करने

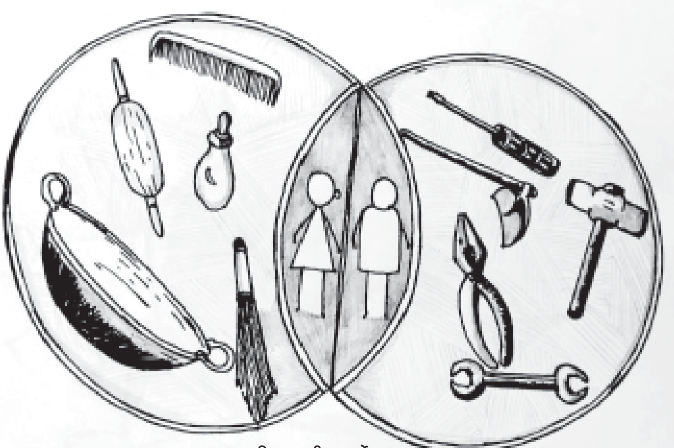
का काम बहुत कुछ सफलतापूर्वक किया गया। नई पाठ्यपुस्तकें भाषा, चित्र, विषयवस्तु चयन में जेंडर संवेदी हैं और प्रस्तुतिकरण में जेंडर पूर्वाग्रहों से सचेत रूप से दूरी बनाती हैं।

किसी भी शैक्षिक सुधार के प्रयास की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हमने अपने शिक्षक / शिक्षिकाओं को किस सीमा तक इन सुधारों को अपनाने के लिए तैयार किया है और इन सुधारों को वास्तविक कक्षा में लागू करने हेतु ज़रूरी क्षमताओं से उन्हें किस सीमा तक लैस किया है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा जारी शिक्षक शिक्षा हेतु *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2009* का लक्ष्य व्यावसायिक रूप से दक्ष और मानवीय गुणों से युक्त शिक्षकों को तैयार करना है। यह पाठ्यचर्या जेंडर संवेदनशीलता की शिक्षा को सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण में अनिवार्य रूप से शिक्षा के मूल आधार में शामिल करने की संस्तुति करती है और इसके पक्ष में तर्क देते हुए यह पाठ्यचर्या कहती है कि,

"शिक्षक शिक्षा के द्वारा जेंडर दृष्टिकोण का निर्माण करने हेतु एक ऐसे शिक्षणशास्त्रीय उपागम की आवश्यकता है जो शिक्षकों को न केवल जेंडर के सिद्धान्तों का व्यवस्थित अध्ययन कराए, बल्कि अनिवार्य रूप से उन्हें जेंडर भूमिकाओं के सम्बन्ध में समाज में अपनी स्थिति का विश्लेषण करने में मदद भी करे। छात्र अध्यापक / अध्यापिकाओं के लिए यह भी आवश्यक है कि वे ऐसे साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन करें जो प्रजातंत्र और शिक्षा के सम्बन्ध पर जेंडर दृष्टिकोण से विचार करता हो। शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में ऐसे अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए जिनसे छात्र अध्यापक / अध्यापिकाएँ जेंडर सिद्धान्तों और वास्तविक जीवन / कक्षा-कक्ष में सम्बन्ध को देख पाएँ। साथ ही विद्यालयी पाठ्यक्रम को भी जेंडर लेंस से देख पाएँ।" *(एनसीएफ़टीई, 2009)*

जेंडर समानता व विद्यालय

यह कहा जाता है कि कोई भी व्यक्ति भविष्य में वैसा ही बनता है जिसकी उससे प्रत्याशा की जाती है। शिक्षक विद्यार्थियों से कैसी प्रत्याशा करते हैं इसका विद्यार्थियों के भविष्य की आकांक्षाओं पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है। सामान्य तौर से अध्यापक / अध्यापिकाएँ यह मानते हैं कि विद्यालयी शिक्षा का मुख्य मक़सद लड़कों को सार्वजनिक जीवन के लिए तैयार करना है; लड़कों को नौकरी करनी है और परिवार का प्रदाता बनना है, वहीं लड़कियों के लिए मुख्य भूमिका घर के अन्दर माँ और पत्नी की है। वर्तमान सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य में लड़कियाँ भी शिक्षा प्राप्त करके नौकरी कर रही हैं, इसके बावजूद भी लड़कियों हेतु उपरोक्त लक्ष्य कम महत्त्वपूर्ण या कम बाध्यकारी माने जाते हैं। शिक्षक अपने विद्यार्थियों से जो प्रत्याशा करते हैं उसमें जेंडर एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। शिक्षकों की विद्यार्थियों से जेंडर्ड प्रत्याशा उनके कक्षा-कक्ष व्यवहारों, शिक्षण रणनीतियों को प्रभावित करती है। शिक्षकों की जेंडर्ड प्रत्याशा पुरुष विद्यार्थियों को ज़्यादा चुनौतीपूर्ण



चित्र : हीरा धुर्वे

कार्यों के लिए तैयार करती है, वहीं लड़कियों को ऐसे कार्यों हेतु तुलनात्मक रूप से कम अवसर उपलब्ध होते हैं। यह प्रत्याशा लड़कियों से परम्परागत, रूढ़ भूमिकाओं को निभाने की अपेक्षा में परिलक्षित हो सकती है या शिक्षकों के अवचेतन मन में व्याप्त पूर्वाग्रह उनकी शिक्षण युक्तियों, चयनित उदाहरणों से दिखते हैं।

इसके अतिरिक्त विद्यालय में रोज़मर्रा के जीवन में लैंगिक पूर्वाग्रह (everyday sexism) या सूक्ष्म या छुपे हुए पूर्वाग्रह (micro aggression) एक बड़ी समस्या हैं (बेट्स, 2014)। इसके अन्तर्गत रोज़मर्रा होने वाले शाब्दिक या व्यवहारिक अपमान आते हैं। इरादतन या ग़ैर-इरादतन किए जाने वाले ये व्यवहार अधिकतर देखने में बेहद मामूली लगते हैं, परन्तु हाशियाकृत समूहों, प्रजातीय या जातीय अल्पसंख्यक समूहों, महिलाओं के ख़िलाफ़ अप्रत्यक्ष / प्रत्यक्ष रूप से नकारात्मक अभिवृत्ति को दिखाते हैं एवं इन समूहों के सदस्यों की नकारात्मक रूढ़ छवियों को बढ़ाते हैं और कार्यस्थल, स्कूल, या अन्य किसी स्थान पर इन समूहों के सदस्यों को असहज और अपमानित करते हैं।

प्रत्यक्ष अपमान और शोषण की तुलना में इन सूक्ष्म या छुपे हुए पूर्वाग्रहों से निपटना ज़्यादा चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि अधिकतर सूक्ष्म या छुपे हुए पूर्वाग्रह मज़ाक़, प्रशंसा या मासूम-सी दिखने वाली टिप्पणी के रूप में किए जाते हैं, पर इनमें उस समूह के लिए एक घृणा, अपमान की भावना छिपी हुई रहती है। जेंडर के सम्बन्ध में अगर बात करें तो हम पाते हैं कि विद्यालय में लैंगिक भेदभाव प्रदर्शित करने वाली (sexist) टिप्पणियाँ अधिकतर मज़ाक़ या मासूम कथन के रूप में अध्यापकों / अध्यापिकाओं द्वारा भी की जाती हैं। यद्यपि ये उनके अवचेतन मन के जेंडर पूर्वाग्रहों का प्रमाण हैं, पर बहुधा अध्यापक इस बारे में गम्भीरतापूर्वक नहीं सोचते हैं। इसीलिए ये सूक्ष्म या छुपे हुए जेंडर पूर्वाग्रह साल-दर-साल बेरोकटोक जारी रहते हैं। जेंडर समानता हेतु यह आवश्यक है कि विद्यालयी संस्कृति से सूक्ष्म जेंडर पूर्वाग्रहों को हटाया जाए, क्योंकि विद्यालय जब इस क़िस्म के व्यवहार को दुहराता है तो न केवल इन जेंडर पूर्वाग्रहों, रूढ़ धारणाओं का सामान्यीकरण करता है, वरन् पूर्वाग्रहों को ख़त्म करके सामाजिक परिवर्तन लाने की एक महत्त्वपूर्ण एजेंसी के रूप में अपनी अर्थवत्ता भी खो देता है।

जेंडर संवेदनशील शिक्षक प्रशिक्षण के अनुभव

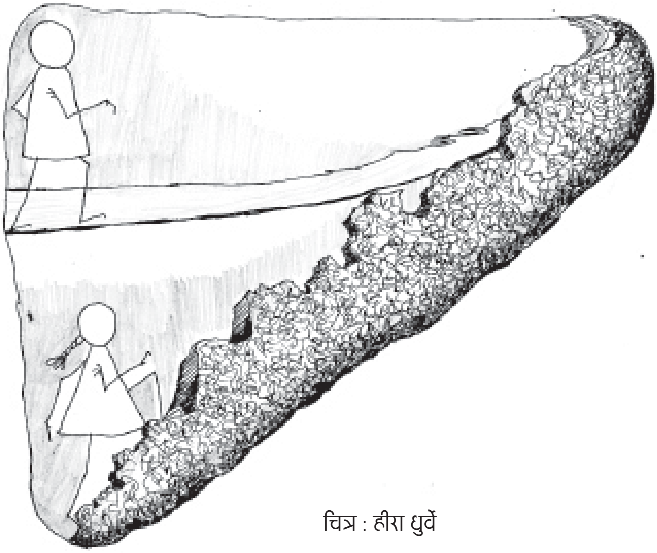
विद्यालय में जेंडर असमानता बड़े पैमाने पर समाज में व्याप्त जेंडर पूर्वाग्रहों, जेंडर-आधारित श्रम विभाजनों को ही पुष्ट करती है, अतः इसपर शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों व अन्य नीति निर्माताओं का ध्यान कम ही जाता है। अतः इन मुद्दों को सम्बोधित करने के लिए मैंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत 'जेंडर, शिक्षा और समाज' पाठ्यक्रम को सन् 2006 से एक वैकल्पिक विषय के रूप में प्रस्तावित किया और तब से लगातार इस विषय को पढ़ा रही हूँ। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने जेंडर सम्बन्धी पाठ्यक्रम को सन् 2014 में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक अनिवार्य अंग बनाने की अनुशंसा की।

इस लेख में, मैं जेंडर पाठ्यक्रम शिक्षण के अपने एक अनुभव के साथ मुख्यतः उन अनुभवों के बारे में बात करूँगी जिनका मुख्य फ़ोकस अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों का ध्यान उनके शिक्षण में चेतन और अचेतन जेंडर पूर्वाग्रहों पर आकर्षित करना और उसपर कार्य करना रहा है। मैं इस लेख में कुछ उदाहरणों के द्वारा अपनी बात रखने का प्रयास करूँगी।

उदाहरण 1

बीएड के शैक्षणिक सत्र 2015-16 के अभ्यास शिक्षण के तहत, वाराणसी के लड़कों के एक स्कूल 'अ' में एक छात्र अध्यापक कक्षा 6 को हिन्दी पढ़ा रहा था। मैं अभ्यास शिक्षण के अवलोकन हेतु कक्षा में पहुँची और सुपरवाइजर

हेतु नियत स्थान पर कक्षा में पीछे बैठकर विद्यार्थी की बनाई हुई पाठ योजना देखने लगी। विद्यार्थी काफ़ी प्रभावपूर्ण आवाज़ में धाराप्रवाह व्याख्या कर रहा था। व्याख्या मुख्य रूप से सीता के एक आदर्श भारतीय नारी के गुणों, यथा– कोमलता, सुकुमारता, और उनके त्याग व पतिव्रता, पर केन्द्रित थी। इसके अतिरिक्त, राम के पौरुषीय गुणों के बखान पर उक्त छात्र अध्यापक ने कुछ समय लिया और फिर उसने कक्षा में एक प्रश्न पूछा, 'एक पतिव्रता स्त्री में क्या-क्या गुण होने चाहिए?'



चित्र : हीरा धुर्वे

मैं थोड़ा आश्चर्यचकित हुई कि कक्षा 6 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में इस प्रकार की विषयवस्तु है, क्योंकि *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के बाद की एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकें अपने ओरिएंटेशन में काफ़ी भिन्न हैं। अतः मैंने पास में बैठे एक विद्यार्थी से हिन्दी की पाठ्यपुस्तक माँगी और पाठ को देखा; पाठ का नाम 'वन के मार्ग में' तुलसीदास द्वारा रचित 'सवैया' था। पाठ में आठ पंक्तियाँ थीं :

पुर तें निकसी रघुबीर-बधू, धरि धीर दए मग में दग द्वै।

झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै।।

फिरि बूझति हैं, "चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै?"

तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।।

"जल को गए लक्खनु, हैं लरिका परिखौ, पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।

पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि-डाढ़े।।"

तुलसी रघुबीर प्रियाश्रम जानि कै बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।

जानकीं नाह को नेह लख्यौ, पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े।।

पाठ में शामिल सवैया और अन्त में दिए गए प्रश्न-अभ्यास, भाषा की बात, अभ्यास कार्य-अनुमान और कल्पना में दिए गए किसी भी प्रश्न व किसी भी कार्यकलाप से इस बात का संकेत भी नहीं मिलता था कि पाठ का उद्देश्य सीता की एक पतिव्रता नारी के रूप में व्याख्या करना है। मुख्य रूप से पाठ के अन्त में निम्नलिखित प्रश्न दिए गए हैं :

"गरमी में चलने पर सीता की क्या दशा हुई?

राम ने थकी हुई सीता की किस प्रकार सहायता की?

पाठ के आधार पर वन के मार्ग का वर्णन अपने शब्दों में करो।"

अभ्यास कार्य 'अनुमान और कल्पना' विद्यार्थियों को कल्पना करने को कहता है कि, "गरमी के दिनों में कच्ची सड़क की तपती धूप में नंगे पाँव चलने पर पाँव जलते हैं। ऐसी स्थिति

में पेड़ की छाया में खड़ा होने और पाँव धो लेने पर बड़ी राहत मिलती है। ठीक वैसे ही जैसे प्यास लगने पर पानी मिल जाए और भूख लगने पर भोजन। तुम्हें भी किसी वस्तु की आवश्यकता हुई होगी और वह कुछ समय बाद पूरी हो गई होगी। तुम सोचकर लिखो कि आवश्यकता पूरी होने के पहले तक तुम्हारे मन की दशा कैसी थी?''

अतः यह सृजनात्मक लेखन कक्षा 6 के विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति, उनके गरमी के अनुभव या अन्य अनुभवों को अपने शब्दों में व्यक्त करने के लिए है और उसमें कहीं भी जेंडर पूर्वाग्रह नहीं दिखता है। सभी बच्चों ने, चाहे वो लड़का हो या लड़की, इन चीज़ों का अनुभव किया है और पाठ में दिया गया अभ्यास कार्य जेंडर समावेशी है।

एक बार यह निश्चित कर लेने के बाद कि मेरा छात्र अध्यापक अपने शिक्षण में अनजाने में ही पाठ के दायरे से न केवल बाहर है, बल्कि उसकी व्याख्या अनावश्यक रूप से जेंडर पूर्वाग्रहों को पोषित कर रही है। और वह इसके बिना भी पाठ को कक्षा के स्तर अनुसार रोचक ढंग से पढ़ा सकता है क्योंकि उसकी भाषा प्रभावी और ओजपूर्ण है और यह एक भाषा शिक्षक के लिए महत्त्वपूर्ण गुण है। मैंने ये टिप्पणियाँ उसकी पाठ योजना में लिखीं और साथ ही ये भी लिखा कि यदि उसका कोई प्रश्न / सन्देह आदि है तो वह मुझसे व्यक्तिगत रूप से कक्षा के बाद मिल सकता है। और मैं उम्मीद करने लगी कि छात्र अध्यापक मुझसे मिलने आएगा और सोचने लगी कि उसके क्या प्रश्न हो सकते हैं।

उम्मीद के मुताबिक़ छात्र अध्यापक आया और वह उसके पाठ पर मेरे द्वारा की गई टिप्पणियों से काफ़ी खिन्न लग रहा था। उसके अनुसार, अगर वह सीता को एक आदर्श भारतीय नारी के रूप में पढ़ा रहा है तो इसमें क्या समस्या है? क्या सीता एक आदर्श भारतीय नारी नहीं हैं? आदि। उसके प्रश्नों से स्पष्ट था कि वह इसे समस्या मान ही नहीं रहा था। सो मैंने तय किया कि विस्तार से बात करने की आवश्यकता है; हमने निम्न बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की और अच्छी बात यह रही कि उस विद्यालय में अभ्यास शिक्षण कर रहे अन्य पाँच-छह छात्र अध्यापक भी इस चर्चा में शामिल हो गए :

- तुलसीदास ने यह साहित्य कब लिखा?
- क्या समय के साथ सामाजिक मूल्य और अपेक्षाएँ बदलती हैं?
- क्या साहित्य की व्याख्या भी बदले समय की अपेक्षाओं के अनुसार बदलनी चाहिए?
- क्या आपके पिता या दादा के लिए जो पुरुषोचित व्यवहार था आज भी वही है, या उसमें परिवर्तन आया है? क्या आप उन सारे पुराने मूल्यों / व्यवहारों का पालन करते हैं या करना ठीक समझते हैं?
- स्त्रियों से समाज की अपेक्षाओं में क्या कोई परिवर्तन आया है? अगर हाँ, तो क्या-क्या और क्या कुछ स्त्रियोचित व्यवहार अभी भी रूढ़ हैं? क्या इनमें कुछ परिवर्तन की ज़रूरत है?
- क्यों पाठ्यपुस्तक निर्माण / लेखन समिति ने इन्हीं पंक्तियों को चुना और अन्य महत्त्वपूर्ण प्रसंगों जैसे– सीता की अग्नि परीक्षा, राम द्वारा सीता का त्याग या सीता का अपहरण को छोड़ दिया?
- क्यों पाठ्यपुस्तक निर्माण / लेखन समिति ने इस पद्य को एक नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का निर्णय किया?
- पाठ के प्रश्न और अभ्यास कार्य में क्यों इस बिन्दु (सीता के आत्मत्याग, पतिव्रता गुणों) पर कोई सवाल या क्रियाकलाप नहीं दिया गया है?
- क्यों अभ्यास कार्य बच्चों को उनके अपने गरमी के मौसम में बाहर जाने के अनुभवों को राम और सीता को गरमी में वन जाते

समय क्या अनुभव हुआ होगा, उसके साथ जोड़कर देखने को कह रहा है?

यह एक लम्बी अनौपचारिक परिचर्चा थी जिसमें छात्र अध्यापकों ने खुलकर भाग लिया और अपने सवाल व सन्देहों को स्पष्ट रूप से रखा और मैंने यथासम्भव उनके सभी सवालों के जवाब दिए। साथ ही उन्हें 'शिक्षा में जेंडर के मुद्दे' *(राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* पढ़ने के लिए कहा और शिक्षा में जेंडर के मुद्दे पर अन्य सामग्री, प्रकाशित पेपर और अन्य आँकड़ों को भी देखने का सुझाव दिया।

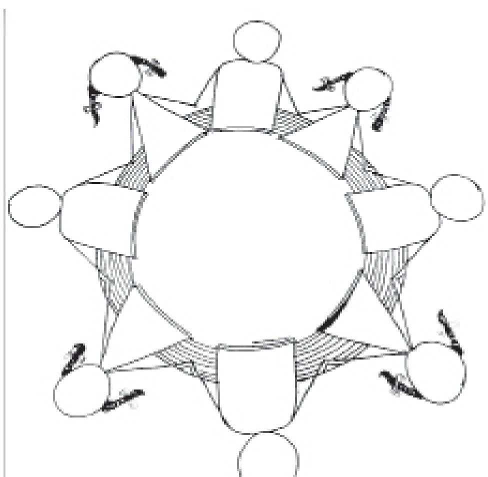
उदाहरण 2

ऐसे ही एक अन्य अवसर पर एक छात्र अध्यापिका कक्षा 7 में अँग्रेज़ी व्याकरण के अन्तर्गत संयोजक (conjunction) का प्रयोग पढ़ा रही थी। उसने बोर्ड पर निम्न वाक्य लिखा :

"Meera is a beautiful but intelligent girl".

मैंने विद्यार्थी की पाठ योजना पुस्तिका में शिक्षण सम्बन्धी अन्य टिप्पणी के साथ निम्न टिप्पणियाँ लिखीं, 'क्या आपको नहीं लगता कि आपके द्वारा लिया गया यह उदाहरण लैंगिक पूर्वाग्रह को पोषित करने वाला है? क्या यह इस धारणा को पोषित नहीं करता कि सुन्दर स्त्रियाँ बुद्धिमान नहीं हो सकतीं या स्त्रियों में सुन्दरता और बुद्धिमत्ता के दोनों गुण एक साथ पाया जाना दुर्लभ या असामान्य है? आपने इस उदाहरण में पुरुषवाचक संज्ञा का प्रयोग क्यों नहीं किया, यथा– Ramesh is a handsome but intelligent boy. क्या स्त्रीवाचक संज्ञा का चुनाव अचेतन रूप से अनायास हो गया आप कक्षा के बाद मिलें।' आशानुरूप विद्यार्थी आई और हमने एक लम्बी चर्चा की जिसमें अन्य विद्यार्थियों ने भी भाग लिया और उपरोक्त विशिष्ट उदाहरण के अतिरिक्त निम्न बिन्दुओं पर बातचीत हुई :

- भाषा में लैंगिक विभेद और पुरुष-केन्द्रित भाषा (androcentric language)
- भाषा किस प्रकार से समाज में व्याप्त जेंडर सत्ता सम्बन्ध को अभिव्यक्त करती है। (रोज़मर्रा के जीवन से विभिन्न भाषिक उदाहरणों (गालियों, अपशब्दों के विश्लेषण) से चर्चा को भाषा व सत्ता सम्बन्ध पर केन्द्रित करने में मदद मिली)
- और किस प्रकार से एक शिक्षक के रूप में हमारी ज़्यादा ज़िम्मेदारी है कि हम जेंडर समावेशी भाषा का इस्तेमाल करें और यह सुनिश्चित करें कि वो लैंगिक पूर्वाग्रहों से मुक्त हो।





चित्र : हीरा धुर्वे

बातचीत बहुत ही सार्थक रही क्योंकि छात्र अध्यापकों ने अपनी मातृभाषा से इस प्रकार के लैंगिक पूर्वाग्रहयुक्त शब्दों, मुहावरों के अन्य उदाहरण भी दिए। साथ ही यह भी निकलकर आया कि उन्होंने पहले कभी भी भाषा और इसके प्रयोग को जेंडर लेंस से नहीं देखा था और सबने ये कहा कि अब आगे से भाषा के प्रयोग में वे विशेष सावधानी बरतेंगे।

उदाहरण 3

ऐसे ही एक अन्य सत्र में लगभग 20 बीएड विद्यार्थी मेरे साथ एक सह-शिक्षा वाले विद्यालय में अपना अभ्यास शिक्षण कार्य कर रहे थे। उनके उन्मुखीकरण सत्रों में मैंने जेंडर संवेदनशील व समावेशी भाषा के बारे में चर्चा की और यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि चूँकि शिक्षण मुख्यतः भाषिक माध्यम से होता है अतः यह बहुत ज़रूरी है कि एक शिक्षिका / शिक्षक की भाषा समावेशी हो क्योंकि इसका विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय (self-concept) पर काफ़ी प्रभाव पड़ता है। यह विशेष रूप से रेखांकित किया कि इस विद्यालय में आपकी कक्षा में लड़के और लड़कियाँ दोनों ही विद्यार्थी के रूप में हैं, इसीलिए यह ज़रूरी है कि आपके सम्बोधन और शिक्षण की भाषा समावेशी हो। साथ ही उनसे यह भी कहा कि चूँकि पुरुष-केन्द्रित भाषा (पुरुषवाचक सर्वनाम व संज्ञा) का प्रयोग वे पहले से करते आए हैं, अतः इसके लिए उन्हें सचेत प्रयास करना होगा। साथ ही इस दिशा में अपनी तरफ़ से उन्हें हर सम्भव सहयोग का विश्वास दिलाया। विद्यार्थियों ने सहमति जताई और आने वाले दिनों में मैंने देखा कि एक पुरुष विद्यार्थी को छोड़कर लगभग सभी विद्यार्थी पाठ योजना लिखते समय और कक्षा शिक्षण के दौरान जेंडर समावेशी भाषा का प्रयोग करने का प्रयास कर रहे हैं, और इस सन्दर्भ में पाठ योजना में मेरे द्वारा अंकित टिप्पणियों को सकारात्मक ढंग से ले रहे हैं। परन्तु वह पुरुष विद्यार्थी लगातार पुरुषवाचक संज्ञा / सर्वनाम का ही प्रयोग कर रहा था और जब मैं उसे टोकती या पाठ योजना में इस बारे में टिप्पणी लिखती तो वह प्रत्यक्ष रूप से ज़्यादा कुछ न कहकर केवल विनम्रता से एक ही जवाब देता कि, 'इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है, इसमें (पुरुषवाचक सम्बोधन में) छात्राएँ भी शामिल हैं'। मैंने काफ़ी अलग-अलग तरीक़े और उदाहरणों से समझाने की कोशिश की, पर अपेक्षित सफलता नहीं मिली। अतः एक दिन उसकी कक्षा के पर्यवेक्षण के बाद मैंने उसकी पाठ योजना में निम्नलिखित टिप्पणी सायास लिखी :

'आप अपनी कक्षा में केवल कुछ तेज़ बच्चों पर ही ज़्यादा ध्यान देती हैं, एक शिक्षिका के रूप में आपका यह दायित्व है कि आप धीमी गति से सीखने वाले अन्य विद्यार्थियों पर भी समान रूप से ध्यान दें।'

सुखद आश्चर्य यह रहा कि वह विद्यार्थी आया और उसने माना कि जब यह टिप्पणी उसने अपने लिए पढ़ी तो उसे बहुत अजीब-सा लगा और वह यह नहीं मान पाया कि इस स्त्रीवाचक क्रियापद और संज्ञापद में वह भी शामिल है, और उसने कहा कि जेंडर समावेशी भाषा के प्रयोग के मेरे आग्रह को वह अब समझ पा रहा है।

उदाहरण 4

यह अनुभव शिक्षा संकाय में जेंडर, विद्यालय और समाज पाठ्यक्रम को पढ़ाने के दौरान का है। एक शिक्षक प्रशिक्षिका के रूप में इस अनुभव ने मुझे मेरे शिक्षणशास्त्रीय उपागम के बारे में पुनः सोचने एवं उसको कक्षा में विद्यार्थियों के सम्मुख न्यायोचित ठहराने के लिए विवश किया।

वाक़या यह है कि नारीवाद के प्रकार, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और मानव समाज हेतु इसके बहुमूल्य योगदान पढ़ाने के बाद की कक्षा परिचर्चा के दौरान एक पुरुष विद्यार्थी (काफ़ी संवेदनशील, अध्ययनशील) ने कहा, 'स्त्रियों पर अतीत में किए गए अन्याय (पुरुषों द्वारा) की विस्तृत चर्चा कुछ पुरुष विद्यार्थियों को असहज कर देती है। मैम, अगर आप पढ़ाने के दौरान

इसपर कम विस्तार से (tone down) बात करें तो ज़्यादा पुरुष विद्यार्थी इस वैकल्पिक पेपर को पढ़ेंगे और नारीवादी सन्देश उन तक पहुँच सकेगा।' मैंने तुरन्त इस मुद्दे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और कहा कि अगली कक्षा में मैं इस मुद्दे पर अपनी बात रखूँगी और साथ ही अन्य विद्यार्थी भी अपने विचार रख सकते हैं। अगली कक्षा में मैंने उस विद्यार्थी के इरादे (intent) की प्रशंसा की और निम्न बिन्दुओं पर अपनी बात रखी :

- नारीवादी चेतना के विकास में इन सामान्य अनुभवों को साझा करने का महत्त्व।
- साथ ही इस बात पर भी बल दिया कि यह असहजता इस बात की द्योतक है कि आप वर्तमान स्थिति को बदलना चाहते हैं। जेंडर सत्ता सम्बन्धों में असन्तुलन की वजह से स्त्रियों व अन्य हाशियाकृत समूहों के ख़िलाफ़ हुए अन्याय की ज़िम्मेदारी आपकी व्यक्तिगत नहीं है, पर सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया में आपका व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों रूप से योगदान होगा। अन्याय या शोषण की व्यवस्थाएँ मानव ने बनाई हैं और इनमें बदलाव भी हम ही करेंगे।
- महिला विद्यार्थियों ने कहा कि अन्याय / शोषण की इन वैश्विक और ऐतिहासिक जानकारियों से नारीवादी विचारधारा के विकास के सन्दर्भ को समझने में उन्हें मदद मिली है और विशेष रूप से उनकी चेतना पितृसत्तात्मक व्यवस्था व विचारधारा के ख़िलाफ़ है न कि किसी व्यक्तिगत पुरुष के।

कुल मिलाकर यह बहुत ही गहन विचार विमर्श था और सन्तोषप्रद बात यह थी कि मेरे सभी विद्यार्थियों ने बेझिझक अपनी बात और सरोकारों को साझा किया और अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि तथ्यात्मक परिशुद्धता महत्त्वपूर्ण है और इसको परिपक्वता से स्वीकार करने में हमें कोई गुरेज नहीं होना चाहिए।

उदाहरण 5

यह अनुभव भी शिक्षा संकाय में जेंडर, विद्यालय और समाज पाठ्यक्रम के दौरान 'जेंडर और जाति' के मध्य सम्बन्ध पढ़ाने के दौरान का है।

चूँकि हम जानते हैं कि जेंडर, जाति और वर्ग जैसे पहचान के अन्य स्रोतों से आवश्यक रूप से सम्बन्धित है, और कई बार हम देखते हैं कि सामाजिक अन्तर्क्रिया में व्यक्ति अपनी जातीय / वर्गीय पहचान को अपनी जेंडर पहचान से ऊपर रखते हैं। उदाहरण के लिए, कामगार वर्ग की महिला / पुरुष के लिए उच्च मध्य वर्गीय महिला / पुरुष एक सम्भावित उत्पीड़क है। 'स्त्री', 'पुरुष' और यहाँ तक कि 'अन्य जेंडर' भी सजातीय श्रेणियाँ नहीं हैं और इन जेंडर पहचानों के साथ-साथ व्यक्ति की जातीय और वर्गीय स्थिति भी उसे प्राप्त विशेषाधिकारों अथवा वंचनाओं का स्रोत होती है, अर्थात एक उच्च जातीय स्त्री की तुलना में एक दलित / बहुजन स्त्री ज़्यादा उत्पीड़ित है।

शुरुआती कक्षाओं में जब मैं उपरोक्त सम्प्रत्ययों और जेंडर उत्पीड़न व अन्य क़िस्म के उत्पीड़न की संरचनाओं, जैसे– नस्ल, वर्ग, और विशेषकर जाति के सम्बन्ध को कक्षा में स्पष्ट करती हूँ तो उस समय पर मैंने देखा है कि विद्यार्थियों में एक क़िस्म की असहजता / तनाव-सा उत्पन्न होता है। जहाँ कक्षा की सभी महिला विद्यार्थी आरम्भ में जेंडर उत्पीड़न की संरचनाओं और अनुभवों से अपना तादात्म्य स्थापित कर लेती हैं, पर जब कक्षा परिचर्चा जेंडर और जातिगत उत्पीड़न में सम्बन्ध पर आती है तो उच्च जातीय महिला विद्यार्थी थोड़ी असहज होती हैं लेकिन बहुधा ज़्यादा मुखरता से उसे कक्षा में व्यक्त नहीं करती हैं। वहीं दलित बहुजन पुरुष विद्यार्थी आमतौर पर जातीय उत्पीड़न के अनुभवों से अपना तादात्म्य तो बहुत जल्दी स्थापित कर लेते हैं, पर कई बार जेंडर उत्पीड़न और दलित पितृसत्ता के अनुभवों से इंकार करते हैं। पर सबसे मुखर विरोध कुछ

उच्च जातीय / वर्गीय पुरुष विद्यार्थियों की तरफ़ से आता है, जो जातीय और जेंडर दोनों क़िस्म के उत्पीड़न को अतीत में हुई घटना मानते हैं और भारत के एक 'महिमामण्डित' अतीत के राष्ट्रवादी संस्करण से कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

ऐसी स्थिति लगभग हर वर्ष आती है, जेंडर और जातीय / वर्गीय उत्पीड़न के सम्बन्धों को स्पष्ट करने के लिए मैं तथ्यों, आँकड़ों की मदद लेती हूँ और साथ ही विद्यार्थियों को वैकल्पिक साहित्य पढ़ने के लिए देती हूँ। मेरी एक कारगर रणनीति विद्यार्थियों को आपसी तर्क-वितर्क / संवाद के अवसर और सहयोग प्रदान करना है; यथा– दलित / बहुजन महिला विद्यार्थी पुरुष सहपाठियों के तर्क के जवाब में दलित पितृसत्ता के अपने अनुभवों को कक्षा में बताती है साथ ही उनके जातीय उत्पीड़न के अनुभव पूरी कक्षा के लिए एक तरह से आईने का काम करते हैं। उच्च जातीय महिला विद्यार्थी ब्राह्मणवादी पितृसत्तात्मक शोषण के अपने अनुभवों को साझा करके अपने उच्च जातीय पुरुष सहपाठियों के तर्क का जवाब देती हैं। बहुधा, ये सत्र तनावयुक्त होते हैं जहाँ काफ़ी ज़्यादा आवेश, ऊर्जा, तर्क-वितर्क और संवाद होता है। ऐसे सत्रों का संचालन चुनौतीपूर्ण होता है, पर विद्यार्थियों की समझ में इज़ाफ़ा करता है। कुछेक विद्यार्थी इन तर्कों से आवश्यक रूप से सहमत नहीं होते और अन्त में ये सहमति बनती है कि वे अपने दृष्टिकोण के पक्ष में तथ्य, प्रमाण और शोधपरक, विश्वसनीय लेख जब चाहें कक्षा में प्रस्तुत कर सकते हैं।

मैं लगातार अपने विद्यार्थियों (प्रशिक्षु अध्यापक / अध्यापिकाओं) को, कक्षा के अन्दर और बाहर, इस क़िस्म के संवाद की प्रक्रिया में शामिल करती हूँ। मेरे संवाद / शिक्षण की रणनीति निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रमुखता से आधारित होती है :

प्रजातांत्रिक शिक्षण : बहुत सारे अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि कक्षा का प्रजातांत्रिक प्रबन्धन विद्यार्थियों के अधिगम अनुभव में गुणात्मक परिवर्तन ले आता है, विशेषकर जब आपके विद्यार्थी युवा हों तो उपदेशात्मक शिक्षण के बजाय प्रजातांत्रिक माहौल में वार्तालाप एक प्रभावी शिक्षण रणनीति है। अपने अनुभव से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि शुरुआती प्रतिरोध, तर्क के बाद अगर बातचीत ग़ैर-धमकी वाले (non-threatening) वार्तालाप के माहौल में हो तो अधिकतर युवा विद्यार्थी अपनी जेंडर सम्बन्धी अभिवृत्ति पर दुबारा विचार करते हैं और परिवर्तन के प्रति खुली सोच रखते हैं। मेरे अधिकतर विद्यार्थी ऐसी लम्बी चर्चा के बाद



चित्र : हीरा धुर्वे

अकसर कहते हैं कि, 'मैंने पहले ऐसे कभी नहीं सोचा' या 'मुझे ऐसे कभी नहीं पढ़ाया गया', 'इस विषय पर मैं और ज़्यादा कहाँ से पढ़ सकती हूँ।'

क्रिटिकल चेतना[1] का विकास : क्रिटिकल सिद्धान्त सामाजिक और व्यक्तिगत विषमता में दमन और विशेषाधिकारों की भूमिका पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। क्रिटिकल चेतना का विकास विद्यार्थियों में, सामाजिक और राजनीतिक विरोधाभासों को उजागर करके, समाज और दुनिया की एक गहरी समझ विकसित करता है और उम्मीद करता है कि विद्यार्थी अपने जीवन में दमन का विरोध कर सकेंगे।

जेंडर विषमता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों में क्रिटिकल चेतना विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि समाज में विभिन्न जेंडर पहचान वाले व्यक्तियों को कौन-कौन से विशेषाधिकार हासिल हैं अथवा वंचनाएँ मिलती हैं, का विश्लेषण किया जाए और विद्यालय किस प्रकार जेंडर असमानताओं को बनाए रखता है अथवा बढ़ाता है। विद्यार्थियों में क्रिटिकल चेतना लेंस के विकास के लिए निम्न गतिविधियाँ या कार्यकलाप मददगार होते हैं :

- **अपने जेंडर समाजीकरण के अनुभवों के बारे में बात करना** : पर इसके लिए यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि कक्षा में परस्पर विश्वास का माहौल हो ताकि विद्यार्थी अपनी जेंडर पहचानों और असमानता / दमन के अनुभवों के बारे में बात कर सकें। इसके लिए मैं जेंडर पाठ्यक्रम को आरम्भ करने से पहले ही विद्यार्थियों को यह स्पष्ट रूप से बताती हूँ कि इस कक्षा में हम व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में बात करेंगे और अनुभवों को साझा करने की यह रणनीति नारीवादी शिक्षणशास्त्र का महत्त्वपूर्ण अंग है, साथ ही इन विद्यार्थी अनुभवों को हम सब कक्षा के सन्दर्भ के बाहर अन्य के साथ साझा नहीं करेंगे। यदि इन अनुभवों को किसी अन्य सन्दर्भ में शिक्षण के लिए प्रयोग करेंगे तो व्यक्तिगत सूचनाओं (personal identifiers) के बिना। मैं यह बात ज़ोर देकर दोहराती हूँ कि ऐसी स्थिति में अनुभव महत्त्वपूर्ण है न कि वह अमुक व्यक्ति।
- **क्रिटिकल चेतना बढ़ाने वाली गतिविधियों को डिज़ाइन और लागू करना** : इसके लिए मैं विद्यार्थियों के साथ कई गतिविधियाँ करती हूँ, जैसे– विद्यार्थी अपने जेंडर समाजीकरण के अनुभवों (पारिवारिक व विद्यालयी) के बारे में बात करें, जेंडर किस प्रकार पहचान के अन्य स्रोतों वर्ग, जाति से सम्बन्धित है– अपनी जेंडर (वर्गीय, जातीय) पहचान के कारण आपको क्या विशेषाधिकार प्राप्त हैं अथवा आपको इस पहचान के कारण किन वंचनाओं का सामना करना पड़ा, इस मुद्दे पर समूह चर्चा आयोजित करना, विद्यालय में या घर में कुछ ऐसे कार्य करना जो आपके जेंडर के लिए असामान्य समझे जाते हों और फिर अन्य विद्यार्थियों / अध्यापकों, अभिभावकों की प्रतिक्रिया को नोट करना एवं इसपर कक्षा में चर्चा करना, किसी फ़िल्म, लोकगीतों, विज्ञापनों पर जेंडर दृष्टिकोण से विश्लेषणात्मक चर्चा करना, आदि। कई बार विद्यार्थी भी कुछ क्रियाकलाप सुझाते हैं, उन्हें भी शामिल करने का प्रयास करती हूँ।

---

1. क्रिटिकल चेतना, ब्राज़ीलियन शिक्षाविद् और सिद्धान्तकार पाउलो फ्रेरे द्वारा विकसित एक सामाजिक और शैक्षणिक सम्प्रत्यय है, जिसकी जड़ें उत्तर-मार्क्सवादी क्रिटिकल सिद्धान्त में हैं। फ्रेरे के अनुसार, क्रिटिकल चेतना के विकास का लक्ष्य प्रजातांत्रिक समाज के निर्माण में वस्तु (objects) के रूप में नहीं, अपितु आत्म-चेतना युक्त व्यक्ति (subjects) के रूप में काम करना है। शिक्षा के क्षेत्र में इससे, फ्रेरे का आशय विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच अन्तरपीढ़ी तुल्यता से है जिसमें दोनों सीखें, दोनों प्रश्न करें, दोनों चिन्तन करें और दोनों ही अर्थ निर्माण में सहभागिता करें। देखें, फ्रेरे, पाउलो (1996) *उत्पीड़ितों का शिक्षाशास्त्र*, अनु. रमेश उपाध्याय, ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली।

- **पहले किए जा चुके सफल प्रतिरोध के बारे में बताना** : जेंडर असमानता को ख़त्म करने में व्यक्तियों (रोल मॉडलों) और संस्थाओं द्वारा अतीत में किए गए सफल हस्तक्षेपों के बारे में बताने से विद्यार्थियों में यह समझ बनती है कि जेंडर असमानता समाज निर्मित है और व्यक्तियों के प्रयासों से मिटाई जा सकती है। साथ ही ये रोल मॉडल एक क़िस्म की आशावादिता का संचार भी करते हैं कि समाज द्वारा थोपी गई रूढ़ जेंडर भूमिकाओं और परिणामी असमानता, ग़ैर-बराबरी को समाप्त करना सम्भव है।

वास्तविक जीवन से सम्बन्ध

क्रिटिकल शिक्षणशास्त्र की आधारभूत प्रस्थापना है कि कक्षा / विद्यालयी शिक्षण का सम्बन्ध विद्यार्थियों के जीवन से होना चाहिए। शिक्षण का वास्तविक जीवन से सम्बन्ध स्थापित करने में और उसे समाज के सन्दर्भ में अवस्थित करने में वास्तविक जीवन से लिए गए उदाहरण सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को अवसर दिया जाना चाहिए कि वे जेंडर समाजीकरण, जेंडर विभेद के अपने अनुभव / भोगे हुए यथार्थ (lived reality) को कक्षा में साझा करें। मेरी हमेशा यही कोशिश रहती है कि प्रशिक्षु अध्यापकों / अध्यापिकाओं के साथ इन मुद्दों पर बातचीत करूँ और व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करने हेतु परस्पर विश्वास का माहौल प्रदान करूँ। चर्चा को शुरू करने के लिए बतौर शिक्षक मैं जेंडर समाजीकरण और असमानता के अपने अनुभव भी विद्यार्थियों से साझा करती हूँ। जातीय पहचानों के कारण प्राप्त विशेषाधिकारों / वंचनाओं का जेंडरगत असमानता के साथ अन्तर्सम्बन्ध है और चर्चा में इसे रेखांकित करना महत्त्वपूर्ण है। मेरे अनुभव से मैं यह कह सकती हूँ कि इन चर्चाओं का अपेक्षित परिणाम मिलता है।

उपरोक्त अनुभव के आधार पर मैं कह सकती हूँ कि जेंडर संवेदनशील शिक्षण हेतु अध्यापकों / अध्यापिकाओं की तैयारी या उनका प्रशिक्षण बहुत ही ज़रूरी है, अन्यथा किताबों व पाठ्यक्रम में सुधार करने के अपेक्षित परिणाम नहीं मिलेंगे। शिक्षण एक जीवन्त क्रिया है और पाठवस्तु की व्याख्या हमेशा अध्यापकों / अध्यापिकाओं की आत्म-चेतना (subjectivity) के सापेक्ष होती है। अतः शिक्षकों में जेंडर असमानता के सम्बन्ध में क्रिटिकल चेतना न केवल एक बेहतर, जेंडर समावेशी कक्षा व स्कूल वातावरण का निर्माण करेगी बल्कि उनके विद्यार्थियों की जेंडर के प्रति अभिवृत्ति में बदलाव का ज़रिया बनेगी। और शिक्षा के द्वारा जेंडर समानता लाने व सामाजिक परिवर्तन का लक्ष्य प्राप्त करने का हमारा सपना पूरा हो सकेगा।

सन्दर्भ

Bates, Laura (2014). *Everyday Sexism.* Simon & Schuster Ltd. UK

NCERT (2005). *Position Paper National Focus Group on Gender Issues in Education.* NCERT, New Delhi

NCERT (2005). *National Curriculum Framework 2005.* NCERT, New Delhi

---

प्रो. मधु कुशवाहा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के शिक्षा संकाय में पिछले 20 वर्षों से अध्यापनरत हैं। इन्होंने शिक्षा के सामाजिक सन्दर्भ और शिक्षा के सामाजिक मुद्दों को अपने अध्यापन एवं शोध का विषय बनाया है।
सम्पर्क : mts.kushwaha@gmail.com